<u>पाठ्यक्रम का अर्थ(meaning of curriculum)</u>

_शिक्षण कार्य उद्देश्य रहित नहीं हो सकता क्योंकि शिक्षण कि पूर्व निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित विषय वस्तु तथा उसकी व्यवस्था है जिससे पाठ्यक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन या एक मार्ग होता है।

शिक्षण प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व पाठ्यक्रम है। चाहे किसी भी रूप में शिक्षण दिया जाए इसके लिए पाठ्यक्रम की अत्यंत आवश्यकता है। बिना इसके हम यह कदापि नहीं समझ सकते हैं कि क्या शिक्षण हो रहा है, कितना शिक्षण हो गया है, शिक्षण सफल हुआ या असफल आदि। जैसे कि प्रो एवं प्रो कहते हैं- "हम सीखने वाले पर जब तक कि यह ना जाने कि वह क्या सीख रहा है विचार नहीं कर सकते **"।** इसमें सीखने वाले की क्रियाओं के प्रत्येक पद का महत्वपूर्ण स्थान रहता है।

पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी शब्द (करिक्यूलम) curriculum का हिंदी रूपांतरण है करिकुलम शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कुर्रेर (Currere) शब्द से हुई है जिसका अर्थ है **' दौड़ का मैदान '** अंग्रेजी में इसका लक्षणिक अर्थ है ' शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी की प्रगति का क्षेत्र ' इस

अर्थ के अनुसार शिक्षा की तुलना एक दौड़ से की जाती है और पाठ्यक्रम की दौड़ के मैदान में दौड़कर विद्यार्थी को अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचना है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम वह है जिसका अनुसरण करके विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करता है। विद्यालयों का प्रमुख कार्य बालकों को शिक्षा प्रदान करना होता है और इसको पूर्ण करने के लिए वहां जो कुछ किया जाता है उसे पाठ्यक्रम का नाम दिया जाता है।

2

परिभाषा(definition) –

मुनरो के अनुसार –

"पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव नहीं तय है जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है "।

According to Munroe –

" curriculum embodies all the experiences which are utilised by the school to attend the aims of education".

हेनरी जे0 ऑटो के अनुसार –

“ पाठ्यक्रम वह साधन है जिसके द्वारा हम बच्चों की शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के योग बनाने की आशा करते हैं “ ।

According to henry jay auto –

“ the curriculum may be considered as the vehicle by and through which we hope to achieve the objective of education “.

एनन के अनुसार – “ पाठ्यक्रम पर्यावरण में होने वाली क्रियाओं का योग है “ ।

“ The curry cookery kulam is the sum total of the activities that go on on in the environment “.

3.

<u>पाठ्यक्रम की प्राचीन एवं आधुनिक अवधारणा(old and new concepts of curriculum)</u>-

पाठ्यक्रम एक व्यापक शब्द है जिसमें पाठ्य विवरण तथा विद्यालय वातावरण से संबंधित प्रभावी एवं उपयोगी संपूर्ण अनुभवों का समावेश होता है। वास्तविक रूप में पाठ्यक्रम ही वह कार्य है जो कि अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का संपूर्ण जीवन ही पाठ्यक्रम बन जाता है जिससे बालक के व्यक्तित्व के सभी

पक्ष प्रभावित रहते हैं। यह उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास में सहायक होता है।

प्राचीन काल में पाठ्यक्रम केवल विषय वस्तु को ही महत्व देते हुए कुछ विषयों के ज्ञान तक ही सीमित था परंतु आधुनिक युग में विषय वस्तु का प्रयोजन, वाद विवाद, समस्या समाधान, प्रयोगशाला, शिक्षण विधियां आदि पाठ्यक्रम के अंतर्गत आती हैं। प्राचीन शिक्षा पद्धति में विषय वस्तु केवल स्मृति स्तर की होती थी अर्थात रटने या ज्ञानात्मक पक्ष पर ही बल दिया जाता था वही आधुनिक शिक्षण पद्धति में सैद्धांतिक व व्यवहारिक ज्ञान के संबंधित व संतुलित रूप पर पाठ्यक्रम में बल दिया जाता है। प्राचीन शिक्षा पद्धति में विषय वस्तु केवल भाषण तथा पाठ्य पुस्तक के प्रयोग शिक्षण विधि तक ही सीमित थी परंतु वर्तमान शिक्षण विधि विद्यालय परिसर में संचालित सभी गतिविधियों तथा अनुभवों की समग्रता पर बल देता है।

4.

<u>पाठ्यक्रम का क्षेत्र(scope of curriculum)</u> –

पाठ्यक्रम का शिक्षा व्यवस्था के संचालन और शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी आवश्यकता इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए होती है। शिक्षा प्रदान करने के कार्य को संपन्न करने में सर्वाधिक महत्व पाठ्यक्रम का है

यदि पाठ्यक्रम का निर्माण उचित ढंग से होता है तो विद्यालय और शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सफल होते हैं, यदि ऐसा नहीं होता है तो फिर कई समस्याएं बनी रहती हैं। विन्घ ने इस संबंध में ठीक ही कहा है कि- " शिक्षा में आधारभूत समस्या पाठ्यक्रम की है और यदि इस समस्या का हल कर लिया जाए तो अन्य समस्याएं स्वतः हल हो जाएंगी "। इस प्रकार पाठ्यक्रम की व्यापक अवधारणा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम के क्षेत्र को सीमाओं में बांधना अत्यंत कठिन कार्य है फिर भी कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम के क्षेत्र को निम्न बिंदुओं में सीमांकित करने का प्रयास किया है-

१. **शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण(goals and objectives of education)-**

जिस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। उसी प्रकार पाठ्यक्रम बालकों के लिए कुछ निश्चित उद्देश्यों का निर्धारण भी करता है तथा उनको देशों की प्राप्ति के लिए बालकों को प्रेरित करता है।

२.नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य(association of new trades)-

पाठ्यक्रम एक व्यापक अवधारणा का रूप लेता जा रहा है अतः वर्तमान समय में प्रचलन में आने वाली अनेक नवीन प्रवृत्तियों का सहारे भी इसके क्षेत्र में आता है।

३. के संज्ञानात्मक विकास का पोषण(nurturing child's cognitive development)-

पाठ्यक्रम का उद्देश्य बालकों के सर्वांगीण विकास एवं ज्ञान वर्धन करना भी होता है और वह बालकों को विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रदान करके उनका संज्ञानात्मक विकास करता है।

४. बालकों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन(promotion of social and psychological health of children)-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में रहते हुए उसे कुछ अधिकारों का उपभोग एवं कर्तव्यों का निर्वाह करना होता है। इसके लिए विद्यालयों में बालकों को पाठ्यक्रम के द्वारा सामाजिक विकास एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन किया जाता है।

५. अधिगम हेतु व्यवस्था(arrangement for learning)-

अधिगम एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। जिस प्रकार ठहरे हुए पानी में अनेक गंदगीया एवं बीमारियां पनपने लगती हैं उसी प्रकार जब व्यक्ति अधिगम कार्य बंद कर देता है तो उसमें भी रूढ़िवादिता आ जाती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम समय-समय पर बालकों के नवीन एवं विभिन्न प्रकार के अधिगम हेतु सुविधा प्रदान करता है।